रात्रि क्लास 15-10-68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

जब जब कोई त्योहार आते हैं तो बाबा सदैव समझाते हैं, बच्चे भी समझते हैं हर 5000 वर्ष बाद दिवाली होती है। दुनिया नहीं जानती। जैसे शिवजयन्ति भी मनाई गाई जाती है तो जरूर शिव की यहां ही पधारामणी हुई है। गुप्त तो सभी होता ही है। अवतार तो सभी का होता है। घड़ी2 रीइनकारनेशन करते हैं अर्थात ऊपर से नीचे आते हैं। शिव बाबा का भी यह री इनकारनेशन है। बाप आकर जरूर नई दुनिया की स्थापन करेंगे ना। कितना दूर से आते हैं। सभी एक्सपीट करते हैं। खास शिवरात्रि भारत में ही मनाते हैं। बाहर वाले तो सिर्फ कहते हैं परमात्मा एक है। कब, कहां आते हैं वह पता ही नहीं है। भारत में आते हैं तो जरूर सौगात लावेंगे ना। नई दुनिया की सौगात लाते हैं। भगवानुवाच मैं तुम बच्चों के लिये तीरी पर अहिस्त लाया हूं। बाप बच्चों के लिये जरूर कुछ कुछ न सौगात टोली आदि जरूर ले आवेंगे ना। प्यार रहता है ना बच्चों पर। यह है बेहद का बाप। तो बच्चों के लिये चीज़ जरूर लावेंगे। सौगात भी सभी के लिये एक जैसे ही लावेंगे। इस लिये कहा जाता है सर्व की सदगति करने लिये आते हैं। उनको कहा जाता है शान्तिधाम। मनुष्य शान्ति बहुत चाहते हैं। तो बाप सौगात ले आते हैं। याद भी असर कर के कृष्ण को ही करते हैं। क्योंकि वह बच्चा है। छोटे बच्चे को सतोप्रधान कहा जाता है। बड़ा हुआ तो रजो तमो कहेंगे। इसलिये कृष्ण को बहुत ही प्यार करते हैं। वास्तव में आयु के हिसाब से ल०ना० को सतो कहेंगे। कृष्ण को ही जास्ती प्यार करते हैं। बच्चों पर जास्ती प्यार होता है। शादी हुई बच्चा पैदा हुआ तो फिर स्त्री का प्यार बंट जाता है। जास्ती हिस्सा बच्चा ही ले जाता है। स्त्री से बच्चों पर जास्ती प्यार होता है। क्योंकि वह वारिस होता है। मां भी समझती है बाप का वरसा पैदा हुआ। सिर्फ शास्त्रों में गड़बड़ कर दी है। बाप ने समझाया है भक्ति माना दुर्गति। मैं तो आकर स्वर्ग की स्थापना करता हूं। 21 जन्मों का वरसा दे जाता हूं। कोई को भी समझाना बहुत ही सहज है। फिर भी कितने हार खाते हैं। इनको हार और जीत का खेल कहा जाता। हार खाने से बहुत ही कम पद। जीत पाने से बहुत ही ऊंच पद पा सकते हैं। तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार करने वाले होते हैं। कोई चार आने का, कोई दो आने, कोई तो एक आने का भी पुरुषार्थ नहीं करने वाले हैं। बाप तो जानते हैं ना लायेस्ट प्रजा भी होनी है। तो इनका पैसे जितना भी पुरुषार्थ नहीं। वह फिल भी करते हैं हम तो पैसे जैसा पुरुषार्थ करते हैं। पढ़ाई है ना। भगवान आकर पढ़ाते हैं यह तुम ही जानते हो। दुनिया में कितना घोर-अंधियारा है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। बाप आकर समझाते हैं। तुम अभी भक्ति और ज्ञान का कान्ट्रास्ट समझते हो। ज्ञान दिन, भक्ति रात। तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो रात किसको दिन किसको कहा जाता है। पूछ भी सकते हो ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा का रात क्यों गाया हुआ है। थोड़ी सी बात समझाने ही कितनी मेहनत करनी पड़ती है। एक लौकिक बाप को बाप कहना राईट है। और वह आत्माओं का बाप है। बस। और कोई हो नहीं सकता। यहां तो बहुतों का फादर कह देते। म्यर को भी फादर कह देते। यह अनलाफुल है ना। वहां ऐसे बहुत फादरस होते ही नहीं। यह प्रजापिता ब्रह्मा भी नहीं होगा। यह संगम युग बड़ा ही वन्डर फुल है। नालेज भी बहुत वन्डर मिलती है। तो यह नालेज है। जिसको कोई मनुष्य नहीं जानते। बाप को नालेजफुल कहा जाता। वह सभी के वैल्यु को जानने वाला है। बच्चे समझते हैं बाप का ज्ञान वन्डरफुल है। बाप कहते हैं कल्प2 मैं ज्ञान देता हूं। तुम भी फिर से वही ज्ञान ले रहे हो। यह समझ की बात है ना। बेहद का बाप बिन्दी समान है। दुनिया तो नहीं जानती। सा० के लिये समझाया है उन से कोई फ्यूदा नहीं। सा० की दरकार ही नहीं रहती। यह तो सभी को निश्चय है। यह हमारा बेहद का बापटीचर, सदगुरु भी है। लौकिक तो सिर्फ बाप ही होता है फिर भी हमको भूलते क्यों हैं। जब कि मैं तुम्हारा शिक्षक, बाप, सदगतिदाता हूं। और विश्व की बादशाही भी देता हूं। फिर भूलने की क्या दरकार है। क्यों इतना याद में फर्क पड़ जाता है? कितनी बड़ी राजधानी स्थापन हो जाती है। वन्डर के सिवाय और कुछ कह नहीं सकते। बाप को भूलने से आसुरी चंचलता कितनी करते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

शिव बाबा याद है ?